ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(11): 153-156
www.allresearchjournal.com
Received: 04-09-2021
Accepted: 06-10-2021

विनीत कुमार लाल दास
(1) शोधार्थी, स्नात्कोत्तर मैथिली विभाग, ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत
(2) एम. ए. मैथिली स्वर्ण पदक प्राप्त, यूजीसी नेट, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Corresponding Author:
विनीत कुमार लाल दास
(1) शोधार्थी, स्नात्कोत्तर मैथिली विभाग, ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत
(2) एम. ए. मैथिली स्वर्ण पदक प्राप्त, यूजीसी नेट, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

रमानंद रेणुक निबंध मे कलात्मक अभिव्यक्ति

विनीत कुमार लाल दास

प्रस्तावना

रमानंद रेणु कवि, कथाकारे टा नहि छलाह अपितु ओ निबंधकार आ कुशल समीक्षक सेहो छलाह। समय-समयपर विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न विषयपर विद्वतापूर्ण निबंध हिनक प्रकाशित अछि।

'कर्णामृत' जुलाइ-सितम्बर 1995 मे प्रकाशित 'विद्रोही रचनाकार यात्री' शीर्षक निबंधमे कलात्मक अभिव्यक्ति

'विद्रोही रचनाकार यात्री' शीर्षक निबंधक शीर्षके एतेक आकर्षक अछि त पूरा निबंध कतेक आकर्षक होयत, से सहजे अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। कोनो बातक अभिव्यक्ति वक्ताक वाणी-कुशलतापर निर्भर करैत अछि। एहि निबंधमे छोट-छोट वाक्यक प्रयोग क क ओकर गतिशीलताकेँ बढ़ा देने छथि। ओ कहने छथि- "समाजक दुराग्रहक प्रति विरोध प्रकट करब हुनक जीवनक ध्येय छलनि आ एहि हेतुएं ओ सदकत संघर्ष करैत रहलाह- पिता सं, परिवार सं, गाम सं, समाज सं, व्यक्ति सं, स्थिति सं, धर्म सं, मान्यता सं आ अन्त-अन्त धरि स्वयं सं सेहो। यैह कारण छल जे ओ अथक अनन्त यात्रा मे जीवन बीताबैत संघर्षशील रहलाह। कतहु चैन नहि। आ तेँ अपन दिशा, अपन व्यवहार आ अपन विचार बदलैत रहलथि।"[1]

उपरोक्त निबंधांशमे जे बात कहलनि अछि, ताहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे रेणु जी यात्रीक संबंधमे गहन जानकारी राखैत छथि। कम शब्दमे सार रूपमे सभ बातकेँ स्पष्ट क देब, एक प्रकारक कलात्मक अभिव्यक्ति होइत अछि।

'विद्रोही रचनाकार यात्री' शीर्षक निबंधमे रेणु जी लिखने छथि- "ओ स्वयं मानैत छथि जे पहिल कविता ओ 1930 ई.मे मैथिलीए मे लिखने छलाह। साहित्य दिस झुकावक श्री गणेश एतहि सं मानल जा सकैत अछि।"[2]

उपरोक्त उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे यात्री जी पहिल कविता मैथिलीमे 1930 ई.मे लिखने छलाह। यात्री जी एहि बातकेँ कतहु लिखने होयताह आ रेणु जीसँ एहि संदर्भमे कहियो गप करने होयताह। तखने त लिखने छथि जे 'ओ स्वयं मानैत छथि' नहि त ई बात कोना कहल जा सकैत अछि? कोनो बातकेँ प्रमाणिक रूपमे प्रस्तुत करब, ईहो एक प्रकारक कलात्मक अभिव्यक्ति अछि।

कोनो-कोनो लोककेँ आदत होइत अछि जे कोनो बातकेँ कहबाक लेल ततेक बड़का भूमिका तैयार करैत अछि जे मुख्य बात गौण भ जाइत अछि आ लोककेँ ओकर बात बुझबामे नहि आबि सकैत छैक। एकर विपरीत कतेको लोक एहन होइत छथि जनिक अभिव्यक्ति कलात्मकताक संग सरल, सहज होइत अछि आ एहने लोकमे रमानंद रेणुक नाम आदरक

संग लेल जाइत अछि। विद्वान लोक जखन अपन गात कहय लागैत छथि त ई ध्यान नहि रहि जाइत छनि जे वाक्य छोट भ रहल अछि की नमहर? हुनक अभिव्यक्तिमे वेग रहैत छनि। एक टा सरल प्रवाह रहैत छैक। तेँ वाक्य नमहरो भ जाइत छैक। ई बात हिनक निबंधमे देखबामे आबैत अछि। देखल जाय पाँती- "गामक परिवेश मे रहैत हुनक प्रतिभाकेँ सही जमीन नहि भेटि रहल छलैक, संगहि अपन पारिवारिक जीवन सँ त्रस्त एवं कुंठित भऽ रहल छलाह। फलतः विशेष अध्ययन करबाक क्रममे पिताक विचारक विरूद्ध काशी चल गेलाह जतऽ कविवर सीताराम झाक प्रेरणा एवं सान्निध्य मे एक अत्यन्त उत्साही युवक कांचीनाथ झा 'किरण'क साहचर्य भेटलनि जे मैथिलीक अस्तित्वक रक्षार्थ विभिन्न प्रकारक गोष्ठी, सभा आ हस्त लिखित पत्रिकाक आयोजन करैत रहैत छलाह।"[3]

कोनो रचनाक जा धरि सम्यक अध्ययन नहि होइत छैक ता धरि ओकरा संबंधमे किछु नहि कहल जा सकैत अछि। जखन सूक्ष्म विवेचन करल जाइत अछि तखन विवेचकक ज्ञानक सीमा स्पष्ट होइत अछि आ एहिसँ हुनक अभिव्यक्ति शैली देखबामे आबैत अछि। देखल जा सकैत अछि हुनक किछु पाँती- "मातृभूमि मिथिलाक प्रति असीम अनुरागक कारणेँ एकर सर्वतोमुखी उत्थान करबाक हेतु जेना ओ कटिबद्ध भेल छलाह, सर्वत्र स्वार्थ परकताक प्रधानता सं मोन खिन्न भऽ उठलनि आ आक्रोश सं दग्ध हृदयकेँ कहुना मना नहि सकलाह। अपन मिथिला आ मैथिलक प्रवृतिक बड़ लगीच सं अध्ययन कयने छलाह। धर्मक अऽढ़मे मर्यादाक अतिक्रमण होइत, पाखण्डक भ्रमजाल पसारल, मानव मूल्यक क्षरण, सामाजिक विकृति, स्वार्थांधताक पराकाष्ठा, नैतिकताक सम्पूर्णतः ह्रास, छल-छद्म आ कुटिल व्यक्तित्व मे निर्लिप्त जन मानस, अनाचार आ व्यभिचारक अखण्ड साम्राज्य आ समस्त दुर्वृतिक प्रचार-प्रसार। सनातन धर्मक प्रति आभ्यान्तर मे जे आस्था छलनि, तकर दुर्गति होइत ओ देखि रहल छलथि।"[4]

कोनो व्यक्तिक व्यक्तित्वकेँ स्पष्ट करबाक लेल हुनक जीवनकेँ सम्यक रूपसँ अध्ययन करय पड़ैत छैक, तखने सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ सरल रूपेँ व्याख्यायित क सकब। सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेर कमसँ-कम शब्देँ व्यक्त करब एक प्रकारक कलात्मक अभिव्यक्ति अछि जे एहि प्रकारेँ देखबामे आबैत अछि- "सामाजिक विषमताकेँ तोड़बाक निमित्त ओ स्वयं अपना केँ उत्सर्ग कयलनि. ई विषमता मैथिली समाज केँ कोढ़क रूपमे ग्रसित कयने छल। यात्री जी स्वभावसं फक्कड़, वेश-भूषा सं महज मामूली, पारिवारिक बोझ उघबा सं कतियाइत, सदति भ्रमणशील अन्वेषक, रूढ़ि भंजक प्रवृत्ति, श्रमशक्ति केँ कार्यरूप देबा मे आस्था, अन्धविश्वासी परम्पराक विद्रोही, प्रगतिशील जन चेतनाक पक्षधर, जनवादी विचारधाराक प्रतिपादक, त्रिकालदर्शी आ क्रान्तिदर्शी रचनाकारक रूप मे अवतीर्ण भेल रहथि।"[5]

एहि संसारमे जतेक काज होइत अछि, ओकर पाछू कोने-ने-कोने कारण अवश्य रहैत अछि आ एक टा काजक पाछू अनेकानेक छोट-पैघ कारण लागल रहैत छैक। जखन कोनो घटनाक विश्लेषण करल जाइत अछि त ओहिमे उपस्थित कारण सभक चर्चा करब अनिवार्य भ जाइत अछि। ईहो एक प्रकारक कला अछि अभिव्यक्तिक। जखन हिनक निबंध देखैत छी त एहि प्रकारक कलात्मक अभिव्यक्ति देखबामे आबैत अछि। देखल जाय- "यैह सभ कारण छल जे यात्रीजी कवि सं अधिक उपन्यासकार क रूप मे चिन्हार आ चर्चित भेलाह। जाहि विस्तृत फलक पर ओ उपन्यासक पात्रक सङ तादात्म्य स्थापित कऽ समस्त जड़ता, शोषण आ अत्याचारक उद्घाटन कयलनि से कविता मे कथमपि संभव नहि भऽ सकत। सन् 1946 ई. मे सर्वप्रथम 'पारो' सन ओजस्वी उपन्यास लऽ कऽ पाठकक सम्मुख उपस्थित भेल रहथि। एहि उपन्यास मे अभिजात्य संस्कार पर कठोरता पूर्वक प्रहार कयल गेल छल। बिरजू आ बिरजूक पिसियौत बहिनक परस्पर आकर्षण, प्रेम आ कोमल रूप मे क्रमात बढ़ैत गेल स्थितिक चित्रण बड़ स्पष्ट रूप सं कयल गेल छल जे समाजक एकटा नग्न सत्य छल। एहि प्रकारक अनैतिक आ अशोभनीय संबन्ध कैक रूप मे समाज मे झापन तऽर व्याप्त छल जे कुलीन परिवारक अन्तर्कथा रहितो क्यो उद्घाटित नहि कऽ पबैत छल, से खाहेँ सामाजिक प्रतिबंध होअओ, कटु सत्य कहबाक साहसक, अभाव होअओ, कौलिक अपसंस्कृति होअओ आकि अपन लाज केँ झांपने रहबाक दुर्वृत्ति. एहन समस्त संबंध धृणास्पद होइत छैक, एहि तथ्यक खुलेआम डंका पर चोट कऽ कहब यात्री जीक अदम्य साहस आ आत्मबल केँ प्रकट करैत छल। ओहि समय ओ एहन विकारक रहस्य केँ एना खुजि कऽ लिखने उपहासक भोक्ता रहलाह, प्रताड़ित होयबाक पात्र घोषित कयल गेलाह, कटुक्ति, व्यंग्य आ ईष्या-द्वेषक वाण सं बिद्ध होइत रहलाह आ एक टा विवादास्पद रचनाकार केँजे भोगवाक चाही, से सहर्ष स्वीकार करैत रहलाह। यात्रीजी अकस्मात अपना केँ एहन रचनाकारक रूप मे उपस्थित कयलनि जे समाजक आँखि मे आङुर दऽ कऽ स्थितिक यथार्थताक बोध करौलक। विचार सं बाम पंथी धाराक चिन्तकक रूप मे अपन रचना केँ जनवादी दृष्टिकोण सं भरल-पुरल रखलनि। सामान्य पाठक जे एखन धरि आडन मे बैसि कऽ चिनवारक खिस्सा सूनबा मे व्यस्त छल, झापनक आभ्यन्तर मे जे कुकृत्य भऽ रहल छल, जे संस्कृति आ आदर्श भावना पर कुठाराघात कऽ नैतिकताक उपहास कऽ रहल छल, स्वयं कुत्सित पात्र रहितो समाजक

समक्ष अपन गौरव गाथा उद्घैत फोकिला व्यवस्थाक संचालन करैत छल, तकर स्पष्ट चित्र 'पारो' मे भेटैत अछि।"[6]

कखनो काल कोनो-कोनो व्यक्ति अपन भाषा-वाणीमे चमत्कार देखयब।क लेल, धारा-प्रवाहताक लेल, प्रभावोत्पादकताक लेल शब्दक ताना-बाना बुनबामे विपरित शब्दक प्रयोग अनायासे क बैसथि छथि आ लेखनक बादमे ओकरा दोबारा पढ़ि क छाँटबाक काजकेँ आवश्यक नहि बुझैत छथि। वास्तवमे हुनका ई भाने नहि रहैत छनि जे हम जे बजलहुँ वा लिखलहुँ अछि, ओहिमे कोनो प्रकारक त्रुटि भेल अछि। जँ संदेह करताह त निश्चित रूपेँ ओहि त्रुटिकेँ दूर करबाक अवसर नहि गमौने रहताह। ई एक प्रकारक त्रुटि अछि। लिखबाक काल जँ सजग नहि रहब तँ एहि प्रकारक त्रुटि लेखनमे होयबाक संभावना बढ़ल रहैत छैक। ई बात उपरोक्त उद्धरणमे देखबामे आबैत अछि। ओ कहने छथि- "समाजक आँखि मे आङुर दऽ कऽ स्थितिक यथार्थताक बोध करौलक।"[7] एहि पाँतीमे 'समाजक आँखि' आ ओहिमे 'आङुर दऽ कऽ' ई दूनू शब्द अर्थ बोध होयबामे बाधा उत्पन्न क रहल अछि कारण जखन क्यो आँखिमे आङुर द देतै त आँखिसँ पानि चलय लगतैक आ जेहो देखाइ दैत छलैक, सेहो झलफला जयतैक। त की ई ओहि स्थितिक वर्णन सही ढ़ंगसँ क सकलाह अछि? एहि प्रश्नक संदर्भमे हम कहय चाहब जे बलपूर्वक देखयबाक अर्थमे कहय चाहैत छलाह मुदा ओ सही ढ़ंगसँ कहि नहि सकलाह।

जखन कोनो रचनाकार आ हुनक रचनापर निबंध लिखल जाइत छैक त पाठककेँ ध्यानमे राखब आवश्यक होइत छैक कारण रचना आ रचनाकारक विषयमे जँ बात नहि करब त कोना होयत? तेँ रचना आ रचनाकारक विषयमे सारगर्भित बात सभकेँ सरल आ स्पष्ट रूपेँ संक्षेपमे कहब आवश्यक अछि। निबंधमे ई गुण कलात्मक अभिव्यक्तिक नामसँ जानल जा सकैत अछि आ जखन रेणु जीक निबंधकेँ पढ़ैत छी त देखैत छी जे रचना आ रचनाकारक विषयमे सरल ओ स्पष्ट रुपेँ संक्षेपमे कलात्मक अभिव्यक्ति भेल अछि जे निम्न पाँतीसँ स्पष्ट होइत अछि-

"विचार सं बाम पंथी धाराक चिन्तकक रूप मे अपन रचना कें जनवादी दृष्टिकोण सं भरल-पुरल रखलनि। सामान्य पाठक जे एखन धरि आडन मे बैसि कऽ चिनवारक खिस्सा सूनबा में व्यस्त छल, झापनक आभ्यन्तर मे जे कुकृत्य भऽ रहल छल, जे संस्कृति आ आदर्श भावना पर कुठाराघात कऽ नैतिकताक उपहास कऽ रहल छल, स्वयं कुत्सित पात्र रहितो समाजक समक्ष अपन गौरव गाथा उद्घैत फोकिला व्यवस्थाक संचालन करैत छल, तकर स्पष्ट चित्र 'पारो' मे भेटैत अछि।

एहि रचनाक आधार पर मानवीय मूल्यक सही स्वरूप ठाढ़ करबाक हेतु औपन्यासित समस्त औदात्त लऽ कऽ सोझा मे उपस्थित छल, पाठक अपन परिवेश, अपन जीवन, अपन पतनोन्मुख संस्कृतिक आ संस्कार सं एकाकार भेल छल, मैथिली साहित्यक हेतु सर्व प्रथम प्रयास रहितो पाठकक एक विशाल वर्गक मध्य अमिट. छाप लऽ कऽ आयल। यैह रचनाकारक यथार्थ सफलता छल।

सन् 1949 ई० मे यात्री जीक विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छिड़ियायल कविता सभक संकलन 'चित्रा' क प्रकाशन भेल। ईहो कविता एक ठाम पाठक वर्ग कें भावात्मक रूप सं उद्वेलित-संवेदित करबा मे पूर्णतः सफल रहल। अपन प्रगतिशील दृष्टिकोण, मार्क्स द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष तथा सामाजिक विद्रोही स्वर स्पष्ट परिलक्षित भेल।"[8] कोनो बातकेँ सुन्दर रुपमे अभिव्यक्त करब एक कला थिक। एहि कलाकेँ उपयोगमे अनबाक लेल 'विशेषण' शब्दक निर्माण करल गेल अछि। एकर ठाम-ठामपर प्रयोग करलासँ अभिव्यक्तिमे कलात्मकता आबैत अछि आ जखन रेणु जीक 'विद्रोही रचनाकार यात्री' शीर्षक निबंध देखैत छी त स्पष्ट होइत अछि जे एक टा विशेषण शब्द के कहय? ई त दू-दू टा विशेषण शब्दक प्रयोग शीर्षकमे करने छथि। एहि क्रममे हमरा एहि निबंधमे - अप्रतिम व्यक्तित्व, अथक अनन्त यात्रा, पहिल कविता, साहित्य दिस झुकाब, छिटपुट कविता, प्रसिद्ध कविता, गमैया छात्र, गामक परिवेश, सही जमीन, पारिवारिक जीवन, विशेष अध्ययन, अत्यन्त ऊर्जावान, प्रज्वलित परिवेश, ओजस्वी प्रतिभा, मातृभूमि मिथिला, असीम अनुराग, सर्वतोमुखी उत्थान, दग्ध हृदय, सामाजिक विकृति, कुटिल व्यक्तित्व, निर्लिप्त जनमानस, अखण्ड साम्राज्य, राक्षसी प्रवृति, स्पष्ट चित्रण, सामाजिक विषमता, भ्रमणशील अन्वेषक, अंधविश्वासी परंपरा, क्रांतिदर्शी रचनाकार, विस्तृत फलक, ओजस्वी उपन्यास, अभिजात्य संस्कार, कठोरतापूर्वक प्रहार, पिसियौत बहिन, नग्न सत्य, अशोभनीय संबंध, कुलीन परिवार, कटु सत्य आदि विशेषण शब्दक प्रयोग देखबामे आबैत अछि।

रमानंद रेणुक लेखन-कलामे कलात्मक अभिव्यक्तिक रुपमे मुहावरा, कहबीक प्रयोग सेहो देखबामे आबैत अछि। एहि निबंधक निम्नलिखित वाक्यकेँ देखल जा सकैत अछि-

1. "साहित्य दिस झुकावक श्री गणेश एतहि सँ मानल जा सकैत अछि।"[9]
2. एहि पाँतीमे 'श्री गणेश'क प्रयोग मुहावराक रुपमे करल गेल अछि जकर अर्थ होइछ - प्रारंभ करब।
3. "ओकर क्रिया-कलाप हाथीक दाँत बनि गेल अछि।"[10]
4. एहि पाँतीमे 'हाथीक दाँत'क प्रयोग मुहावराक रुपमे करल गेल अछि जकर अर्थ होइछ - देखावटी वा निरर्थक, अनुपयोगी वस्तु।
5. "अनैतिक आ अशोभनीय संबन्ध कैक रूप मे समाज मे झापन तऽर व्याप्त छल जे कुलीन परिवारक अन्तर्कथा रहितो क्यो उद्घाटित नहि कऽ पबैत छल, से खाहें

सामाजिक प्रतिबंध होअओ, कटु सत्य कहबाक साहसक, अभाव होअओ, कौलिक अपसंस्कृति होअओ आकि अपन लाज के झांपने रहबाक दुर्वृत्ति. एहन समस्त संबंध धृणास्पद होइत छैक, एहि तथ्यक खुलेआम डंका पर चोट का कहब यात्री जीक अदम्य साहस आ आत्मबल कें प्रकट करैत छल।"[11]

संदर्भ

1. विद्रोही रचनाकार यात्री- रमानंद रेणु ; कर्णामृत जुलाइ-सितम्बर 1995, पृष्ठ संख्या- 18
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 18
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 18
4. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 18
5. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 19
6. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 19
7. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 19
8. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 19
9. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 18
10. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 18
11. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 19